ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

ओ३म् क्रतो स्मर ।

वर्ष-8, अंक-1 सितम्बर 2014 आश्विन

सृष्टि संवत् 1960853115 विक्रमी संवत् 2071 दयानन्दाब्द 191

हिन्दी-दिवस के अवसर पर शुभकामनाएँ !

आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए आपने विभिन्न विधाओं में लेखन-कार्य किया है । अतएव इस पत्रिका के माध्यम से, आपसे प्रार्थना है कि पृष्ठ 9 से 12 के अनुसार-

आर्य-साहित्य-सेवी विश्वकोश

के लिए अपना विस्तृत परिचय, चित्र तथा लेखन-कार्य का विवरण अविलम्ब भेजने का कष्ट करें ।

सम्पादक

मूलचन्द गुप्त

ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-110045

ओ३म्

ओ३म्–सुप्रभा

वैदिक सभ्यता–संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

• *परामर्श*

डॉ० धर्मपाल आर्य
(पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार)
ए/एच–16, शालीमार बाग, दिल्ली–110088
दूरभाष–011-27472014
011-27471776

• *सम्पादक*

मूलचन्द गुप्त
(पूर्व प्रधान आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली)

• *प्रकाशक*

मूलचन्द गुप्त,
अध्यक्ष, **ओम्–प्रतिष्ठान**
कुसुमालय, बी–1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली–110045
दूरभाष–9650886070
011-25394083

ई-मेल-Ompratisthan@gmail.com

ओ३म्–सुप्रभा में प्रकाशित लेखों के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है । वे विचार लेखक के अपने हैं ।

प्रकाशक–मुद्रक–स्वामी–मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं० 17, कैलाशनगर, दिल्ली–31 (फोन–22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी–1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली– 45, से प्रकाशित किया । न्यायक्षेत्र–दिल्ली

उद्देश्य

✧ वैदिक सभ्यता, संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता का पोषण करना, वैदिक विचार–धारा के अनुसार मानव–निर्माण करना, समरस और समेकित समाज का संगठन करना, विश्व भर में सुख और शान्ति की स्थापना करने का प्रयास करना **ओम्–प्रतिष्ठान** का मुख्य उद्देश्य है ।

✧ इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय समय पर विभिन्न बहुआयामी गतिविधियों का संचालन किया जाएगा ।

✧ रचनात्मक और प्रेरक साहित्य का सृजन, प्रकाशन और प्रसारण का, इन गति–विधियों में प्रमुख स्थान होगा ।

✧ इस पत्रिका में समय–समय पर आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, नैतिक, वैश्विक चेतना जागृत करने से सम्बन्धित विषयों पर मौलिक लेख तथा समाचार प्रकाशित किए जायेंगे ।

✧ **ओ३म्** परमपिता परमात्मा का निज नाम है । परमात्मा इस सृष्टि का नियन्ता है । सृष्टि से सम्बन्धित सभी विषयों का इसमें समावेश किया जाएगा ।

✧ **ओ३म्–सुप्रभा** का प्रकाशन पूर्णतया निजी स्तर पर किया जा रहा है । उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रति मास देश–विदेश के आर्य विद्वानों, लेखकों, उपदेशकों, कार्यकर्ताओं, प्रकाशकों एवं संस्थाओं को ओ३म्–सुप्रभा **निःशुल्क** भेजी जा रही है।

✧ लघु–पत्रिका के कारण, प्रकाशनार्थ लेख न भेजें ।

✧ सुधी पाठकों से निवेदन है कि वे अपने सुझाव भेजकर कृतार्थ करते रहें ।

ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

रचना, स्थिति और प्रलय, कर्मों का फल जिस का विधान है ।
ओ३म् सुप्रभा ज्ञान अनुपम, सुरभित जिस से जन कुसुम प्राण है ।।

वर्ष–8, अंक–1 सितम्बर 2014 आश्विन
सृष्टि संवत् 1960853115 विक्रमी संवत् 2071 दयानन्दाब्द 191

ओ३म्–महिमा

पुरुषोवाव यज्ञः (सवनत्रय–यज्ञमय जीवन)

—महात्मा नारायण स्वामी

पुरुषोवाव यज्ञस्तस्य यावि चतुर्विंशति वर्षाणि तत्प्रातः सवनं। चतुर्विंशत्यक्षरागायत्री गायत्रं प्रातः सवनं तदस्य वसवोऽन्वायत्ताः प्राणा वाव वाव एते हीदंं सर्व-वासयन्ति ॥

तञ्चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपेत्स ब्रूयात् प्राणा वसव इदं में प्रात सवनं माध्यन्दिनं सवनमनुसन्तनुतेति माऽहं प्राणाना: वसूनांमध्ये यज्ञो विलोप्सीयेत्युद्धैव तव एत्यगदो ह भवति ॥

अथ यानि चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्माध्यन्दिनं सवनं चतुश्चत्वारि शदक्षरा त्रिष्टुप वैष्टुभं माध्यन्दिनं सवनं तदस्य रुद्रा अन्वायत्ताः प्राणा वाव रुद्रा एते हीद् सर्व रोदयन्ति ॥

छान्दोग्य उपनिषद् 3.16.1–3

अर्थ–(पुरुषः, वाव, यज्ञः) पुरुष ही यज्ञ है (तस्य, यानि चतुर्वि् शतिवर्षाणि, तत्, प्रातः, सवनम्) उसके जो 24 वर्ष हैं प्रातः सवन है । (चतुर्वि् शति, अक्षरा गायत्री, गायत्रं, प्रातः सवनम्) गायत्री 24 अक्षरों की होती है इसलिये गायत्री प्रातः सवन है (क्योंकि प्रातः सवन में, गायत्री छन्द ही प्रयुक्त होता है), (अस्य, तत्, वसवः अन्वायत्तः) इस (पुरुष यज्ञ) के उस (प्रातः सवन) से वसु सम्बन्धित है । (प्राणः, वाव, वसवः) प्राण ही वसु हैं (हि, एते, इदं, सर्वं, वासयन्ति) क्योंकि ये ही इस सब (प्राणी समूह) को बसाते हैं ।

(एतस्मिन्, वयसि, तम्, चेद्, किञ्चित, उपतपेत्) इस 24 वर्ष के ब्रह्मचर्य की आयु में उस (ब्रह्मचारी) को यदि (कोई) कुछ भी दुख दे (अर्थात्

ब्रह्मचर्य में बाधा डाले) तो (सः ब्रूयात्, प्राणः, वसवः इदं, मे, प्रातः सवनम्) वह (उनसे) कहे कि हे (प्राणाः वसवः) प्राणप्रिय बन्धुओ, यह मेरा (ब्रह्मचर्यरूपी) प्रातः सवन है । (आप लोग मेरे लिये) (माध्यन्दिनं, सवनं, संतनुत, इति) माध्यन्दिन सवन (अर्थात् 44 वर्ष के ब्रह्मचर्य) को विस्तृत करें (और ऐसा यत्न करें कि) (प्राणानां, वसूनां मध्ये) आप प्राण प्रिय बन्धुओं के मध्य में (अहं, यज्ञः, मा, विलोप्सीय, इति) मैं जो यज्ञ हूं, न लुप्त हो जाऊं । (तत्, ह, उद्, एति) इस (विनय) से वह (ब्रह्मचारी) उदित होता है । (अगदः ह, भवति) रोग (चिन्ता रहित होता है) ॥

(अथ, यानि, चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि, तत्, माध्यन्दिनं, सवनं) इसके बाद जो 44 वर्ष (द्वितीय ब्रह्मचर्य के) हैं वह माध्यन्दिन सवन है । चतुश्चत्वारिंशद्, अक्षरा, त्रिष्टुप, चैष्टुभं माध्यन्दिनम्, सवनम्) 44 अक्षरों का त्रिष्टुप छन्द होता है । (इसलिये) त्रिष्टुप माध्यन्दिन सवन है । (अस्य, तत्, रुद्राः, अन्वायत्ताः) इस (पुरुष यज्ञ) के उस (माध्यन्दिन सवन) से रुद्र सम्बन्धित हैं । (प्राणाः, वाव, रुद्राः) प्राण ही रुद्र हैं (हि, एते, इदं, सर्वं, रोदयन्ति) क्योंकि ये ही इस सब (प्राणी समूह) को रुलाते हैं । ●

ओ३म्-महिमा

—पण्डित देवनारायण भारद्वाज

प्रभु ओम् प्रकट हो जाते हैं ।
गीत ओम् के गाते हैं ॥

अंग अंग बस रहे अंगिरा, सुनते भक्तों की सहज गिरा ।
हृदय उमड़ती ध्वनि तरंग में, प्रभु से रहता उर व्योम घिरा ।
वे सुन स्तुति मुस्काते हैं, जब गीत प्रेम के गाते हैं ॥
प्रभु ओम् प्रकट हो जाते हैं ।......

कर दूर उदासी निष्क्रियता, उत्साह पूर्ण ला सक्रियता ।
पावन इन्द्रियां बनाता जो, प्रभु वर की पाता वह प्रियता ।
कर्मठ हो जगत सजाते हैं, हम गीत ओम् के गाते हैं ॥
प्रभु ओम् प्रकट हो जाते हैं ।......

संयम शुचिता स्वीकार जिसे, भाता सौजन्य सुधार जिसे ।
जग और जगतपति दोनों से, आता करना व्यवहार जिसे ।
आह्वान वही कर पाते हैं, जब गीत ओम् के गाते हैं ॥
प्रभु ओम् प्रकट हो जाते हैं ॥

—'वरेण्यम्' एम०आई०जी० भूखण्ड-45, अवन्तिका-1,
रामघाट रोड, अलीगढ़-202001 (उ० प्र०)

सम्पादकीय

ओ३म् सुप्रभा का सितम्बर 2014 का अंक सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । हम उन विद्वानों के प्रति श्रद्धावनत हैं जिन्होंने आर्यसमाज की गतिविधियों को नए आयाम दिये हैं तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपना योगदान किया है ।

इस मास में अध्यापक दिवस है तथा हिन्दी दिवस है । इस सम्बन्ध में भी हमनें यथोचित सामग्री प्रस्तुत की है ।

अध्यापक दिवस

भारतवर्ष में गुरुपूर्णिमा का उत्सव प्राचीन काल से मनाया जाता रहा है जिसका अपना विशिष्ट महत्व है । इसी शृंखला में रक्षाबन्धन का पर्व भी श्रावणी पूर्णिमा को मनाया जाता है । उपनयन संस्कार एवं वेदारम्भ संस्कार तथा समावर्तन संस्कार भी पुरातन काल से आयोजित किए जाते रहे हैं । इन सबका सम्बन्ध वस्तुतः गुरु शिष्य परम्परा से है । गुरु शिष्य को शिक्षा प्रदान करता है तथा शिष्य गुरु के प्रति शिक्षार्जन हेतु श्रद्धापूर्वक स्वयं को समर्पित करता है । शिक्षा का महत्व इसी बात में है कि ब्रह्मचारी गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षा पाए तथा राष्ट्र के लिए समर्पित नागरिक बने । वह स्वयं चरित्रवान बने, अपना भरण-पोषण करने में समर्थ हो तथा समाज और राष्ट्र के लिए भी उपयोगी हो । इसी परम्परा में वर्तमान काल में 'शिक्षक दिवस' का आयोजन प्रारम्भ हुआ है । इसका सम्बन्ध डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन से है । डा० राधाकृष्णन दार्शनिक एवं शिक्षाविद् के रूप में सुविख्यात हैं । उनके राष्ट्रपति बनने के बाद से 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा ।

अध्यापकों को मानव निर्माण का श्रेय है उन्हें राष्ट्र निर्माता कहा जाता है । महर्षि स्वामी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में दूसरे और तीसरे समुल्लास में, शिक्षा, अध्ययन तथा अध्यापन के विषय में पर्याप्त प्रकाश डाला है । वे अपना कथन शतपथ ब्राह्मण के इस वचन से प्रारम्भ करते हैं–

'मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेद ।' उनका मानना है कि जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता, तथा तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पुरुषार्थ चतुष्टय की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा गुरु ही देता है । शिष्य के चित्त में जिज्ञासा का भाव भी वही जाग्रत करता है । कठोपनिषद में नचिकेता और आचार्य यमराज का आख्यान इसका उदाहरण है । नचिकेता यमराज से मृत्यु का रहस्य जानना चाहता है । यमराज उसको अपने लक्ष्य से हटाने के लिए अनेक प्रलोभन भी

देता है पर बालक नचिकेता अपने लक्ष्य की प्राप्ति के प्रति दृढ़ है और वह हर प्रलोभन को ठुकरा देता है । नचिकेता की दृढ़ संकल्प शक्ति के सम्मुख यमराज को झुकना पड़ता है और वह उसे जीवन मृत्यु का रहस्य बताने के लिए बाध्य हो जाते हैं वस्तुतः शिष्य के हृदय में जब प्रबल जिज्ञासा होती है तभी वह ब्रह्मविद्या तथा भौतिक विद्या को जान सकता है ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है– 'बालकों को माता पिता, सदा उत्तम शिक्षा करें जिससे सन्तान सभ्य हों ।' उन्होंने शब्दोच्चारण पर भी बल दिया है । उन्होंने आगे लिखा– 'जब पांच-पांच वर्ष के लड़का-लड़की हों, तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावे । अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी ।' वे सभी भाषाओं के अध्ययन के प्रबल समर्थक थे । राष्ट्रीय एकता के लिए भी आवश्यक है कि हम सभी भाषाओं अथवा अधिकतम भाषाओं को सीखें तथा व्यवहार में लाएं । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हमें अन्य भाषाएं पढ़नी चाहिएं । साथ ही यह भी कहा कि मनुष्य अपनी भाषा में अपने आप को अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सकता है । अतः अपनी भाषा में विशेष योग्यता प्राप्त करे । वे संस्कृत भाषा के अध्ययन पर विशेष बल देते थे । हमारा सारा साहित्य वेद, दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण आदि संस्कृत में उपलब्ध है । संस्कृत अन्य भाषाओं की जननी है । अतः हमें इस भाषा का अध्ययन करना चाहिए । उनका यह कथन भी ध्यातव्य है ।

'माता शत्रु, पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।'

हमारा कर्तव्य है कि हम अध्यापकों का सम्मान करें । उनसे अधिक से अधिक सीखने का प्रयास करें । अध्यापकों का भी यह कर्तव्य है कि वे अपने शिष्यों को सुशिक्षा प्रदान करें । माता-पिता का भी यह कर्तव्य है कि वे अपनी सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या, धर्म, सभ्यता आदि की उत्तम शिक्षा दें ।

हिन्दी दिवस

भारतवर्ष लम्बे समय तक पराधीन देश रहा । उसे लम्बे समय तक संघर्ष के पश्चात् स्वाधीनता मिली । उस पीढ़ी के लोगों ने अपना सब कुछ स्वाधीनता की बलिवेदी पर उत्सर्ग कर दिया । स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् यह प्रयास किया गया कि भारतवर्ष की एक भाषा हो । भारत एक बहुभाषी देश है । जिसमें अनेक भाषाएं तथा बोलियां एवं उपबोलियां है । अतः इस समस्या का समाधान सरल नहीं था । भाषा का विषय एक महत्वपूर्ण विषय था । भाषा के लिए डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी की अध्यक्षता में एक उपसमिति का गठन किया गया था । इस समिति में सभी प्रान्तों के प्रतिनिधि थे । यह

(शेष पृष्ठ 8 पर)

गायत्री स्तवन

—श्याम नारायण

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

परमात्मा हम सबको सद्बुद्धि दें, उज्जवल भविष्य के मार्ग पर आगे बढ़ायें ।

(पद्यानुवाद)

'शुभ ज्योति के पुंज, अनादि अनुपम,
ब्रह्माण्ड व्यापी आलोककर्त्ता ।
दारिद्रय दुःख भय से मुक्त कर दो,
पावन बना दो हे देव सविता ॥1॥

ऋषि देवताओं से नित्य पूजित,
भव बंधन मुक्ति कर्त्ता ॥
स्वीकार करलो वंदन हमारा,
पावन बना दो हे देव सविता ॥2॥

हे ज्ञान के धन त्रैलोक्य पूजित,
पावन गुणों के विस्तारकर्त्ता ।
समस्त प्रतिभा के आदि कारण,
पावन बना दो हे देव सविता ॥3॥

हे गूढ़ अंतःकरण में विराजित,
तुम दोष-पापादि संहारकर्त्ता ।
शुभ धर्म का बोध हमको करा दो,
पावन बना दो हे देव सविता ॥4॥

हे व्याधिनाशक हे पुष्टिदाता,
ऋग्, साम, यजुर्वेद संचार कर्त्ता ।
हे भूर्भुवः स्वः में स्वप्रकाशित,
पावन बना दो हे देव सविता ॥5॥

सब वेदविद्, चारण, सिद्ध योगी,
जिसके सदा से हैं गानकर्त्ता ।
हे सिद्ध संतो के लक्ष्य शाश्वत,
पावन बना दो हे देव सविता ॥6॥

हे विश्व मानव से आदि पूजित,
नश्वर जगत् में शुभ ज्योति कर्त्ता ।
हे काल के काल-अनादि ईश्वर,
पावन बना दो हे देव सविता ॥7॥

हे विष्णु, ब्रह्मादि द्वारा प्रचारित,
हे भक्त पालक, हे पापहर्त्ता ।
हे काल-कल्पादि के आदि स्वामी,
पावन बना दो हे देव सविता ॥8॥

हे विश्व मंडल के आदि कारण,
उत्पत्ति - पालन - संहारकर्त्ता ।
होता तुम्हीं में लय यह जगत् सब
पावन बना दो हे देव सविता ॥9॥

हे सर्वव्यापी, प्रेरक, नियन्ता,
विशुद्ध आत्मा कल्याणकर्त्ता ।
शुभ योग पथ पर हमको चलाओ,
पावन बना दो हे देव सविता ॥10॥

हे ब्रह्मनिष्ठों से आदि पूजित,
वेदज्ञ जिसके गुणगानकर्त्ता ।
सद्भावना हम सब में जगा दो,
पावन बना दो हे देव सविता ॥11॥

हे योगियों के शुभ मार्गदर्शक,
सद्ज्ञान के आदि संचार कर्त्ता ।
प्रणिपात स्वीकार लो हम सभी का,
पावन बना दो हे देव सविता ॥12॥

—"महाश्रेष्ठ सदन", तृतीय तल 3, सी-246:
न्यू पाटलिपुत्र, पटना-800013

[नया भाषा-भारती-संवाद,
जन०-मार्च 2012 से साभार]

(पृष्ठ 6 का शेष)

भी स्वाभाविक था कि सभी अपनी भाषा के प्रति विशेष आग्रह अथवा दुराग्रह रखे । आवश्यकता यह अनुभव की गई कि पहले राजभाषा के मानक तय किए जाएं । राजभाषा ऐसी हो जिसे सरकारी अधिकारी आसानी से सीख सकें, उसे धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक सम्पर्क के रूप में प्रयोग में लाया जा सके, उसे अधिकांश भारतीय बोलते हों, तथा सारे देश को उसे सीखने में आसानी हो । इन मानकों के आधार पर सभी की दृष्टि 'हिन्दीभाषा' पर गई । अतः हिन्दी को राजभाषा बनाया जाना सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया गया । परन्तु इसके नाम को लेकर मत वैभिन्य सामने आया । इसका नाम हिन्दी हो या हिन्दुस्तानी, इसकी लिपि देवनागरी हो या रोमन, अंकों का स्वरूप क्या हो, इसे तत्काल लागू किया जाए अथवा कुछ समय पश्चात् ।

पर्याप्त चर्चा के पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि देवनागरी में लिखित हिन्दी को राजभाषा की पद की अधिकारी तथा अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप एवं अंग्रेजी 15 वर्षों तक सहभाषा के रूप में जारी रहे । अन्तिम निर्णय 14 सितम्बर 1949 को लिया गया था, इसलिए 'हिन्दी दिवस' प्रतिवर्ष '14 सितम्बर' को मनाया जाता है । हिन्दी का इतिहास बहुत पुराना है । स्वाधीनता संग्राम की भाषा भी हिन्दी थी । भक्त कवि जो हिन्दीतर प्रान्तों से थे, उन्होंने भी काव्य रचना हिन्दी में की । महात्मा गांधी गुजराती होते हुए भी हिन्दी के समर्थक थे । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपनी बात जनता तक पहुंचाने के लिए हिन्दी का सहारा लिया । यद्यपि वे संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे । अंग्रेजी मिशनरियों ने भी हिन्दी को अपनाया था । प्रेमचन्द, प्रसाद, गुप्त, निराला, दिनकर, आदि ने हिन्दी को सुसमृद्ध किया । जस्टिस शारदाचरण मिश्रण ने तो 'देवनागर' नाम का समाचार पत्र निकाला । हिन्दी की लिपि भी पूर्णतया वैज्ञानिक है, जो लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है ।

आज हिन्दी को वह गौरवमय स्थान प्राप्त नहीं हो पाया है जिसकी वह अधिकारिणी है । आज विश्व के अनेक देशों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है । विदेशों में अनेक लेखक और साहित्यकार हिन्दी में प्रशंसनीय लेखन कर रहे हैं । हमारा कर्तव्य है कि हम हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक बढ़ायें । हिन्दी राष्ट्रीयता की संजीवनी है । हिन्दी का विस्तार राष्ट्रीयता का विस्तार है । हिन्दी हमारे लिए एक सम्पूर्ण जीवनशैली है । हिन्दी को जनप्रिय, सरल, सुबोध, सुलभ एवं सर्वत्र पहुंचने वाली बनाना हमारा कर्तव्य है । हम सभी राष्ट्र भाषाओं का भी सम्मान करें तथा भारतीय संस्कृति के उन्नयन में योगदान दें । किसी भी विदेशी भाषा या क्षेत्रीय भाषा से हमारा वैमनस्य नहीं है । हम हिन्दी के विकास की ओर ध्यान दें तथा उसे गौरवमय स्थान दिलायें ।

—सम्पादक

आर्यसाहित्यसेवी विश्वकोश

दिवंगत एवं वर्तमान आर्य साहित्यसेवी

आर्यसमाज और वैदिक साहित्य का प्रणयन करने वाले सर्वात्मना समर्पित विद्वान् लेखकों, कवियों, निबन्धकारों तथा अन्य विधाओं में लिखने वाले मनीषियों को वर्तमान पीढ़ी के लोग प्रायः भूल चुके हैं ।

ओम् प्रतिष्ठान की ओर से योजना बनायी गयी है कि वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में अपना सर्वस्व आहुत करने वाले साहित्यसेवियों का परिचय एक ही स्थान पर प्रकाशित किया जाए । यह हमारा पवित्र कर्त्तव्य है कि जिन आर्य लेखकों ने विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया है, और जो वर्तमान में कर रहे हैं, उनके प्रति कृतज्ञता का भाव अपनाएं । यदि हमने समय रहते, प्रामाणिक जानकारी एक स्थान पर एकत्र नहीं की, तो हमारे साहित्यकारों और विद्वानों के विषय में या तो अनर्गल और भ्रान्तिपूर्ण सूचनाएं प्रकाशित होती रहेंगी अथवा भावी पीढ़ियां उन्हें भूल जायेंगी ।

वैदिक साहित्य और आर्यसमाज का साहित्य किसी एक देश अथवा भाषा तक सीमित नहीं रहा है, विश्व के सभी देशों में और विश्व की सभी भाषाओं में आर्य साहित्य का प्रणयन पिछले डेढ़ सौ वर्षों में हुआ है । इस योजना के अन्तर्गत विश्व भर के तथा विश्व की सभी भाषाओं के उन लेखकों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों, कवियों, पत्रकारों, समालोचकों, शोधकर्त्ताओं तथा अन्य विभिन्न विधाओं के साहित्यकारों को सम्मिलित किया जाएगा, जिनका लेखन कार्य आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में सहायक रहा है । जिन विद्वानों ने स्वतन्त्र ग्रन्थों का प्रणयन नहीं किया अपितु लेख लिखे हैं तथा पत्र-पत्रिकाएं और ग्रन्थ सम्पादित किए हैं, सम्पादकीय तथा अग्रलेख लिखे हैं, उन्हें भी इसमें सम्मिलित किया जाएगा ।

हमें यह सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि आर्यजगत् में इस योजना को भारी समर्थन मिल रहा है । लगभग चार हजार विद्वान् लेखकों/कवियों/शोधकर्त्ताओं/भजनोपदेशकों/पत्रकारों के विस्तृत-परिचय तैयार हो चुके हैं। ओम् प्रतिष्ठान द्वारा बनायी गयी सूची के शेष आर्य साहित्यसेवियों को ''ओ३म्-सुप्रभा'' तथा पत्रों के माध्यम से परिचय भेजने की प्रार्थना की जा रही है । हमें विश्वास है कि शेष आर्यसाहित्यसेवी भी अपने विस्तृत परिचय अतिशीघ्र भेजेंगे ।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

ओम् प्रतिष्ठान

बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-110045

आर्य साहित्यसेवी विश्वकोश

दिवंगत एवं वर्तमान आर्य साहित्यसेवी

परिचय परिपत्र

चित्र

१. नाम ....

प्रसिद्ध नाम .... पूर्व नाम ....

२. माता और पिता का नाम ....

३. पति/पत्नी का नाम ....

४. जन्मस्थान और जन्मतिथि ....

५. निधन स्थान और निधनतिथि (केवल दिवंगत के लिए) ....

६. संक्षिप्त जीवन परिचय ....

....

७. जीवन के उल्लेखनीय प्रसंग, सम्मान, पुरस्कार, विशेष उत्तरदायित्वपूर्ण पद आदि ....

....

....

८. लेखन कार्य का विस्तृत परिचय

९. संलग्न सामग्री की सूची (चित्र, लेख, पुस्तकें, समाचारपत्र-पत्रिकाओं की कतरनें)

१०. सन्दर्भ (कृपया सन्दर्भित सामग्री की छायाप्रति भेजें)

११. अन्य जानकारी

विशेष–क्रमांक ६, ७, ८ के लिए अलग से पृष्ठ संलग्न करें ।

हस्ताक्षर संकलनकर्त्ता/प्रेषक

नाम

पूरा पता

पिन

दूरभाष

ई मेल

(पृष्ठ 9 का शेष)

इस सारस्वत-यज्ञ में आप हमारा सहयोग निम्न प्रकार कर सकते हैं–

१. विश्वभर के सभी भाषाओं के लेखक, कवि, साहित्यकार अपना जीवन-परिचय, अपने साहित्य का परिचय तथा पासपोर्ट आकार का चित्र एवं प्रकाशित साहित्य की मूल अथवा छायाप्रति संलग्न प्रपत्र के अनुसार यथाशीघ्र भेजकर ।

२. विश्वभर की आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि/प्रादेशिक सभाओं, गुरुकुलों, आर्य विद्यालयों, डी०ए०वी० संस्थाओं, आश्रमों, ट्रस्टों के अधि कारी वर्तमान तथा दिवंगत लेखकों का जीवन-परिचय, उनके साहित्य का परिचय, उनके पासपोर्ट आकार का चित्र तथा उनके साहित्य की मूल अथवा छायाप्रति, संलग्न परिपत्र के अनुसार यथाशीघ्र भेजकर।

यथासम्भव, संस्था की ओर से प्रकाशित इतिहास, शतवर्षीय इतिहास, स्मारिकाएं, अभिनन्दन-ग्रन्थ आदि भेजकर ।

इस योजना की सूचना अपने से सम्बद्ध सभी संस्थाओं तक पहुंचा कर तथा अपनी संस्थाओं के मुखपत्रों में प्रकाशित कर ।

३. विश्व की सभी भाषाओं के प्रकाशक अपने संस्थान से प्रकाशित आर्यसाहित्य तथा उनके लेखकों की जानकारी उपलब्ध कराकर ।

आप से प्रार्थना है कि आप अपना एवं पारिवारिक आर्य विद्वान लेखकों तथा अन्य परिजनों/परिचितों, जिन्होंने आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए लेखन-कार्य किया है, का विस्तृत परिचय 31 दिसम्बर 2014 तक भिजवाकर सहयोग करें। इस तिथि के पश्चात् आने वाले परिचय को विश्वकोश में स्थान नहीं दिया जा सकेगा ।

कृपया समस्त सामग्री रजिस्टर्ड डाक अथवा कोरियर-माध्यम से भेजें ।

मूलचन्द गुप्त - डॉ० धर्मपाल आर्य

सम्पादकद्वय : आर्य साहित्यसेवी विश्वकोश

चलभाष : 9650886070

ओम् प्रतिष्ठान

कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर,
पंखा रोड, नई दिल्ली-110045

राष्ट्र-भाषा हिन्दी

स्व० डॉ० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार
एम०ए०, एल०टी, डी-लिट्

[1]

राष्ट्रभाषा राष्ट्र का जाज्वल्य जीवन प्राण है ।
राष्ट्रभाषा राष्ट्र के कल्प का सन्त्राण है ॥
राष्ट्रभाषा से सदा ही राष्ट्र का कल्याण है ।
राष्ट्रभाषा-रहित सारा राष्ट्र ही म्रियमाण है ॥

[2]

राष्ट्रभाषा ही बने नित राष्ट्र हित सञ्जीवनी ।
सङ्गठन के सूत्र में बांधे जनों की जीवनी ॥
मृतक तन प्राण फूँक शक्ति की सोवास्विनी ।
राष्ट्र गौरव को प्रगति दे तीव्रतर तेजस्विनी ॥

[3]

राष्ट्रभाषा है हमारी आर्यभाषा श्रेष्ठतम ।
"हिन्दवी" ही हिन्द की हारोपमम् हीरोपमम् ॥
उसके लिये संघर्ष में हरदम बढ़े अपने कदम ।
अन्याय के आगे कहीं झुकना कभी सीखे न हम ॥

[4]

शब्द-सरिता बह रही जिसमें शतद्र-सागरी ।
सर्व-स्वर-व्यंजन-विभूषित अमित अभिनव आगरी ॥
ज्ञान-गुण-गर्भित सुगौरव-वारि-गरिमा-गागरी ।
शक्ति किसकी है कि जो हम से छुड़ाये नागरी ? ॥

[5]

राष्ट्रभाषा की विजय हो, राष्ट्र-ध्वज का मान हो ।
विश्व में गूंजे हमारा राष्ट्र "जन मन" गान हो ॥
आर्य संस्कृति का सदा संसार में सम्मान हो ।
कीर्तिमय बन कर चमकता राष्ट्र "सूर्य" समान हो ॥

[57 वर्ष पूर्व, पंजाब हिन्दी सत्याग्रह (1957) के अवसर पर रचित यह रचना "सार्वदेशिक" नव० 1957 से उधृत]

जन मन की शान – हिन्दी

–शिवकरण दूबे "वेदराही"

हिन्द देश के अमर सपूतो, गाओ हिन्दी का गुणगान ।
हिन्दी से ही राष्ट्र जगेगा, हिन्दी है जन मन की शान ॥ 1 ॥

सरल, सुबोध, दिव्य वाणी है, लिपि भी इसकी अनमोल ।
जैसी लिखी, पढ़ो वैसे ही, छोटे-छोटे सुन्दर बोल ।
गीत, कहानी, कविता दोहे, ऋजुता है इसकी पहचान ।
हिन्द देश के अमर सपूतो गाओ हिन्दी का गुणगान ॥ 2 ॥

आओ निज भाषा में बोलें, अन्तर्मन के चिन्तन खोलें ।
जन-भाषा से जन जीवन में प्यार भरा अमृत रस घोलें ।
हिन्दी है जन-जन की आशा, छेड़ो इसकी मधुरिम तान ।
हिन्द देश के अमर सपूतो गाओ हिन्दी का गुणगान ॥ 3 ॥

पर भाषा में शान कहां है, संस्कृति का वरदान कहां है।
राष्ट्र-प्रेम गुणगान कहां है, ऋषियों का विज्ञान कहां है।
निज-भाषा, निज संस्कृति में हम सब का सच्चा सम्मान ।
हिन्द देश के अमर सपूतो गाओ हिन्दी का गुणगान ॥ 4 ॥

अपनी भाषा अपना देश, अपनी संस्कृति अपना वेश ।
पर-भाषा में परवशता की हीन भावना का संदेश ।
भाषा संस्कृति हीन राष्ट्र का होता नहीं कहीं सम्मान ।
हिन्द देश के अमर सपूतो गाओ हिन्दी का गुणगान ॥ 5 ॥

सूर, कबीर, संत तुलसी, मीरा ने इसमें गान किया ।
पंत, प्रसाद और दिनकर ने राष्ट्र-प्रेम गुणगान किया ।
संविधान में हिन्दी ने पाया है समुचित स्थान।
हिन्द देश के अमर सपूतो गाओ हिन्दी का गुणगान ॥ 6 ॥

हम हिन्दी हैं

–विद्यावाचस्पति डॉ० विद्या विनोद गुप्त
डी, लिट् (यू०एस०ए०)

हम हिन्दी हैं-वतन है हिन्दुस्थान हमारा ।
सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्थान हमारा ॥
वाणी मंदिर की अधिष्ठात्री है-हिन्दी ।
राष्ट्र की आत्मा है हिन्दी ।
भारत की भारती है हिन्दी ।
हिन्दी हिन्द की बिन्दी है ।
देश का दिल है हिन्दी ।
देश की दवा है हिन्दी ।
देश की दुआ है हिन्दी ।
और देश की दौलत है हिन्दी ।
इतिहास साहित्य शिक्षा और संस्कृति के
संस्कार की संजीवनी है हिन्दी ।
हिन्दी साहित्य की चंदन है-
विज्ञान का वंदन है ।
राजनीति का अर्चन है ।
धर्म अध्यात्म और दर्शन का अभिनन्दन है ।
काश्मीर से कन्या कुमारी और कच्छ से
कलकत्ता तक के लोगों के हृदयों का स्पंदन है ।
श्री राम का चरित्र है हिन्दी ।
श्री कृष्ण का दर्शन है हिन्दी ।
और भगवान् शिवशंकर की जटाओं से निकली
गंगा है हिन्दी ।
शब्द ब्रह्म के भावतत्व का सत्य है हिन्दी ।
गिरा-अरथ के अर्थ तत्व का शिव है हिन्दी ।
प्रकृति और पुरुष के प्रेमतत्व का सुन्दरम है हिन्दी ।
'सत्यं शिवम सुन्दरम' है हिन्दी ।
'सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्' है हिन्दी ।
जन गन मन अधिनायक है' हिन्दी ।

सत्य है, शिव है, सुन्दरम् है, शील है, शक्ति है,
भाव है, अर्थ है, अक्षर धाम है हिन्दी ।
अच्छत है, चंदन है, वंदन है, अर्चन है, अर्पण है,
अभिवादन है, अभिनंदन है, अभिराम है हिन्दी ।
चेतन है, चिन्तन है, मनन है, मंथन है,
ज्ञान है, विज्ञान है, विवेक है,
निष्काम है, हिन्दी ।
पुरा है, परा है, परात्परा है, प्रीति है,
परम्परा है, प्रज्ञा है, प्रेरणा है,
प्रणाम है हिन्दी ।
अक्षर धाम है हिन्दी, अभिराम है हिन्दी ।
निष्काम है हिन्दी, प्रणाम है हिन्दी ।

हिन्दी राजभाषा है, राष्ट्रभाषा है- सम्पर्क भाषा है, मानक भाषा है और सबसे बढ़कर विश्व भाषा है । विश्व के 175 देशों में हिन्दी की कीर्तिपताका फहरा रही है । वहां के विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है । हिन्दी पर शोध कार्य हो रहा हैं । हिन्दी समाचारपत्र और पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है । दूरदर्शन से हिन्दी में समाचारों का प्रसारण हो रहा है । इन्टरनेट पर भी हिन्दी छा गई है । भाषा वैज्ञानिकों एवं भाषा चिन्तकों का वैश्विक स्तर पर यह निष्कर्ष है कि पूरी दुनिया में भाषा जानने वालों का क्रम है- पहला- हिन्दी, दूसरा चीनी और तीसरी क्रम है अंग्रेजी का । इंग्लैंड में ही अंग्रेजी जानने वालों की संख्या एक तिहाई है क्योंकि वहां की एक तिहाई जनता आइरिश जानती है- एक तिहाई जनता स्काटिश जानती है और एक तिहाई जनता अंग्रेजी ।

हिन्दी का साहित्य विराट है- उसका व्यापक विस्तार है, विपुल भंडार है और उसका सौन्दर्य आलौकिक और अपार है । इसकी सर्वोच्चता और सार्वभौमिकता को कोई माने या न माने विश्व की सर्वाधिक जनता कहती है हम हिन्दी हैं ।

एक दिन ऐसा होयगा जब हिन्दी का होगा संसार ।
घर-घर इसकी पूजा होगी हिन्दी की होगी सरकार ॥

–सावित्री साहित्य सदन, 5/7 सरदार पटेल मार्ग,
चाम्पा, छत्तीसगढ़ 495671

[नया भाषा-भारती-संवाद जन०मा० 2012 से साभार]

हिन्दी दिवस पर विशेष-

हिन्दी कब जन-जन की भाषा बनेगी ?

चौदह सितम्बर प्रतिवर्ष आता है । परम्परा पालन के नाम पर चौदह सितम्बर उन्नीस सौ उनञ्चास को याद किया जाता है कि उस दिन हिन्दी को स्वतंत्र भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था । चौदह सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के नाम पर अनेक पाखण्ड किए जाते हैं । कुछ सरकारी कार्यालयों में 'हिन्दी पखवाड़ा' का आयोजन किया जाता है । सरकारी कामकाज को हिन्दी में करने के लिए बढ़ावा देने के लिए विभिन्न घोषणाएं की जाती हैं । कुछ विद्वानों तथा सरकारी अधिकारियों को यात्रा भत्ते आदि का भुगतान कर दिया जाता है । हिन्दी की दुर्दशा पर रोना रोया जाता है । कुछ हिन्दी के नाम पर रोटियां सेंक ली जाती हैं । सरकारी फाइलों में लिखा जाता है–"वर्क इज बीइंग डन इन हिन्दी" और फाइल अनुमोदन के लिए उच्चाधिकारियों को भेज दी जाती है तथा विभिन्न हिन्दी एककों के कर्मचारियों की ड्यूटी पूरी हो जाती है ।

यह सिलसिला स्वतंत्रता के बाद से निरन्तर चलता आ रहा है । अंग्रेजी महारानी है और हिन्दी नौकरानी है । ऐसा कब तक चलता रहेगा ? इसका समाधान कब होगा ? वास्तविकता यह है कि भारत में मुगलों का शासन हुआ तो देश में उर्दू-फारसी में काम होने लगा तो लोगों ने उर्दू-फारसी सीख ली क्यों कि वह भाषा रोजी-रोटी से जुड़ी थी । अंग्रेजों का राज्य आया तो प्रबुद्ध लोग अंग्रेजी भाषा सीखने लगे तथा लार्ड मैकॉले की शिक्षा नीति सफल हुई । हो तो आज भी यही रहा है। कुछ थोड़े अंग्रेजी वाले, अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए अंग्रेजी को लादे रखना चाहते हैं ।

अस्तु, इस रोने पीटने से तो काम नहीं चलेगा । आवश्यकता केवल कहने की नहीं, अपितु कुछ कर दिखाने की है । भारत के संविधान में हिन्दी को स्वीकार किया गया था । 14 सितम्बर 1949 को डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने अपने भाषण में कहा था–'आज पहली ही बार ऐसा संविधान बना है जबकि हमने अपने संविधान में एक भाषा रखी है जो संघ के प्रशासन की भाषा होगी। इस अपूर्व अध्याय का देश के निर्माण पर बहुत प्रभाव पड़ेगा।' ठीक हुआ । हिन्दी भाषा को मान्यता मिली पर साथ ही कह दिया गया कि सहभाषा के रूप में अंग्रेजी 15 वर्ष तक चलती रहेगी जब तक हिन्दी इतनी समृद्ध न हो जाए कि उसी भाषा में विज्ञान, तकनीक तथा प्रशासन का सब कार्य किया जा सके । यह जो छिद्र छोड़ा गया, बस यही कैंसर का नासूर बन गया जिसने सारे शरीर को खोखला कर दिया । आशंकाओं का खाण्डव वन 15 वर्ष की कालावधि में ही सामने आकर खड़ा हो गया । पंद्रह वर्ष 1965 में समाप्त होने

थे, पर उससे पहले ही हिन्दी का अपहरण हो गया ।' उससे पूर्व ही संसद में उस अवधि को अनिश्चित काल तक बढ़ाने का प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ । भारत के नेताओं ने यह प्रस्ताव पारित कर दिया । यह हिन्दी का दुर्भाग्य था । यह कब सुदिन में बदलेगा ? आज तो कहीं भी, यह संकल्प दिखाई ही नहीं देता कि हिन्दी भारत की सच्चे अर्थों में भाषा बने । अमीर खुसरो की बात कौन याद करेगा–'मैं हिन्दी की तूती हूं, तुम्हें मुझ से कुछ पूछना हो तो हिन्दी में पूछो, तब मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा ।'' भारत स्वतंत्र होने पर बी.बी.सी. के संवाददाता को यह कह दिया गया कि दुनिया को बता दो कि मैं अंग्रेजी भूल गया हूं । क्या आज इस बात को कोई याद करता है ?

इस सितम्बर मास में इन पंक्तियों को दुहराते हैं–

'मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती ।
भगवान भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती ॥
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल ॥'

कैसी विडम्बना है कि हम बोल लेते हैं, दु:खी हो लेते हैं, स्वप्न देख लेते हैं और करते कुछ भी नहीं ।

नया विज्ञान-संसार तो और भी भयावह है । इन्टरनैट पर सब कुछ केवल अंग्रेजी में है। भारवतर्ष के अनेक प्रान्तों में प्राथमिक स्तर से अंग्रेजी पढ़ाई जा रही है । सब जानते हैं कि मातृभाषा जैसी अभिव्यक्ति विदेशी भाषा में नहीं हो सकती, पर फिर भी राष्ट्र के नियामक वह परोस रहे हैं जिससे पेट में मरोड़ पैदा होती है ।

नव जागरण के पुरोधाओं ने अपनी भाषा का स्वप्न देखा था । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी मातृभाषा गुजराती होते हुए भी अपना सारा साहित्य हिन्दी में लिखा । उन्होंने वेदभाष्य हिन्दी में किया । आर्यों के लिए आर्यभाषा को अनिवार्य रूप से व्यवहार में लाने की प्ररणा दी । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उनके योगदान को महत्त्वपूर्ण माना । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र उनसे प्रभावित थे । उनके समय में आर्यदर्पण (1870), आर्यभूषण (1876) और भारत-सुदशा प्रवर्त्तक (1879) मासिक पत्र प्रारंभ हुए । उनकी 'आत्मकथा' को हिन्दी साहित्य की आद्य आत्म कथा माना जाता है । उनकी प्रेरणा से राजप्रासादों में हिन्दी प्रारंभ हुई ।

हम संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को स्थान दिलाने के लिए प्रयत्नशील हैं । अच्छी बात है । अनेक विश्व हिन्दी सम्मेलन भी हम कर चुके हैं । आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी को जन-जन की भाषा बनाएं । हम ऋषिवर के उस वाक्य को याद रखें–'मेरे नेत्र उस दिन को देखने के लिए आतुर हैं जब काश्मीर से कन्याकुमारी तक एक ही भाषा को बोलने वा समझने वाले होंगे ।' ●

गतांक से आगे–

चाणक्यसूत्राणि

कार्यबाह्यो न पोषयत्याश्रितान् ॥१३०॥

काम बिगड़ जाने पर राजा अपने आश्रितों का भी पोषण करने में असमर्थ हो जाता है ॥१३०॥

यः कार्यं न पश्यति सोऽन्धः ॥१३१॥

जो अपने काम को अच्छी तरह नहीं देखता, वह अन्धा होता है ॥१३१॥

प्रत्यक्षपरोक्षानुमानैः कार्याणि परीक्षेत ॥१३२॥

प्रत्यक्ष, परोक्ष और अनुमान प्रमाण के द्वारा अपने कामों की परीक्षा करे ॥१३२॥

अपरीक्ष्यकारिणं श्रीः परित्यजति ॥१३३॥

जो बिना विचारे काम करता है, उसे लक्ष्मी त्याग देती है ॥१३३॥

परीक्ष्य तार्या विपत्तिः ॥१३४॥

अच्छी तरह सोच-विचार कर विपत्तियों को पार करे ॥१३४॥

स्वशक्तिं ज्ञात्वा कार्यभारभेत ॥१३५॥

अपनी सामर्थ्य को समझकर ही कार्य आरम्भ करे ॥१३५॥

स्वजनं तर्पयित्वा यः शेषभोजी सोऽमृतभोजी ॥१३६॥

जो अपने स्वजनों को तृप्त करने से बचा अन्न खाता है, वह अमृत भोजन करता है ॥१३६॥

सर्वानुष्ठानादायमुखानि वर्द्धन्ते ॥१३७॥

अनेक उचित कार्य आरम्भ कर देने से आय बढ़ती है ॥१३७॥

नास्ति भीरोः कार्यचिन्ता ॥१३८॥

परिश्रम से डरने वाले लोगों को अपना काम बिगड़ने की चिन्ता नहीं होती ॥१३८॥

स्वामिनः शीलं ज्ञात्वा कार्यं साधयेत् ॥१३९॥

अपने स्वामी के स्वभाव को समझे तथा उसके अनुसार चलकर अपना कार्य सिद्ध करे ॥१३९॥

धेनोः शीलज्ञः क्षीरं भुङ्क्ते ॥१४०॥

गाय के स्वभाव को जानने वाला व्यक्ति ही ही दूध पीता है ॥१४०॥

क्षुद्रे गुह्यप्रकाशनमात्मवान्न कुर्यात् ॥१४१॥

आत्मज्ञ पुरुष क्षुद्र लोगों के समक्ष अपनी कोई गुप्त बात न प्रकट करे॥१४१॥

आश्रितैरप्यवमन्यते मृदुस्वभावः ॥१४२॥

विशेष कोमल स्वभाव वाले मनुष्य का उसके सेवक तक अपमान कर देते हैं ॥१४२॥

तीक्ष्णदण्डः सर्वैरुद्वैजनीयो भवति ॥१४३॥

अतिशय तीक्ष्ण दण्ड देने वाले राजा से सब लोग उद्विग्न हो जाते हैं ॥१४३॥

यथार्हदण्डकारी स्यात् ॥१४४॥

अतएव राजा यथोचित दण्ड का उपयोग करे ॥१४४॥

अल्पसारं श्रुतवन्तमपि न बहु मन्यते लोकः ॥१४५॥

शास्त्रज्ञ होता हुआ भी जो शक्तिहीन होता है, वह संसार में सम्मान नहीं पाता ॥१४५॥

अतिभारः पुरुषमवसादयति ॥१४६॥

अत्यधिक भारी बोझा पुरुष को खिन्न कर देता है ॥१४६॥

यः संसदि परदोषं शंसति स स्वदोषं प्रख्यापयति ॥१४७॥

लोकसभा में जो औरों के दोष कहता है, वह अपनी दुष्टता का विज्ञापन करता है ॥१४७॥

आत्मानमेव नाशयति अनात्मवतां कोपः ॥१४८॥

जो अपने आपको काबू में नहीं रखता, वह कोप करके अपना ही विनाश करता है ॥१४८॥

नास्त्यप्राप्यं सत्यवताम् ॥१४९॥

सत्य मार्ग पर चलने वाले के लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं रह जाता ॥१४९॥

साहसेन न कार्यसिद्धिर्भवति ॥१५०॥

केवल साहस से कार्य नहीं सिद्ध होते ॥१५०॥

व्यसनार्तो विस्मरत्यप्रवेशेन ॥१५१॥

दुखिया दुःख के टल जाने पर उसे भूल जाता है ॥१५१॥

नास्त्यनन्तरायः कालविक्षेपे ॥१५२॥

किसी कार्य के अवसर खो देने से स्वभावतः विघ्न उपस्थित हो जाता है ॥१५२॥

असंशयविनाशात्संशयः श्रेयान् ॥१५३॥

जो काम करने में विनाश निश्चित हो, उसकी अपेक्षा जिस काम को करने में विनाश संदिग्ध हो, तो सन्देह वाला ही कार्य करना चाहिए ॥१५३॥

(क्रमशः)

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं०17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 (फोन-22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-45, से प्रकाशित किया। न्यायक्षेत्र-दिल्ली।